संदेह की रेखा

अमित कुमार चौबे

शोधार्थी, हिन्दी साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
ईमेल –amit93678@gmail.com

गली के आखिरी मकान में वह रहने आया था। सब कहते हैं उससे दूर रहो। मुस्लिम है। बड़ी दाढ़ी और बड़ी आंखे काला चेहरा सच में डरावना होता है। फिल्मों में बचपन से देखते आ रही हूँ कि ऐसे लोग अक्सर गुंडा होते हैं। इस देश में मुस्लिमों की स्थिति कौन नहीं जानता है, स्टीरियो टाइप से उन्हें जाना जाता है। इतिहास पढ़ते हुए मिश्रा सर से अक्सर सुनती थी...देश के विभाजन में इनका बड़ा हाथ था। जाने क्याहुआ था, मुझे सही-सही नहीं पता। इतिहास को जिसने जैसे चाहा, वैसे प्रस्तुत किया। किसी ने अपने ढंग से तो किसी ने सरकारों के कहने पर। यह मेरा केवल एक अनुमान है। बाकी समय जाने क्या हुआ था क्या नहीं? मुझे कभी भी इतिहास पसंद नहीं आया। मैं वर्तमान में जीने वाली बिंदास लड़की हूँ। जिस घर में वह रहने आया था, वह घर बरसों से बंद पड़ा था। अकील अंकल अब दुबई में रहते थे । माँ बताती हैं कि जब वह यहाँ थे तब इस गली में रौनक थी। पर जब से शर्मा अंकल इस कॉलोनी में आए तब से यह गली निरस और वीरान हो गई। इस कॉलोनी का कुछ खो सा गया। शर्मा अंकल के आने के बाद अकील अंकल को सब आतंक का सरगना समझने लगे थे। कहीं भी कोई आतंकी घटना घटती जिम्मेदार उन्हें समझा जाता कि इनकी कौम वालों ने किया है। क्या सच में कुछ लोगों के किए की सजा पूरी कौम को देनी चाहिए। मुझे याद है मुंबई की घटना के बाद मेरी दोस्त फ़ातिमा तकरीबन एक महीने तक कॉलेज नहीं आई थी । पूरी क्लास उसे अजीब नजरों से देखने लगी थी। अजीब नजर क्या होती है? किसी को घुरकर देखना या घूरते रहना तब-तक जब-तक कि वह अपना गुनाहकबूल न कर ले। फ़ातिमा के साथ भी तो ऐसा ही हुआ था। उसे आते-जाते उठते-बैठते सब जगह घुरा जाने लगा था। एक समय के लिए मैं भी तो उससे दूर होने लगी थी। जब ये बातें मैंने माँ को बताई तो मेरी अनपढ़ माँ पढ़े-लिखे पिता से कहीं ज्यादा समझदार लगी थी। माँ ने उस समय कहा था कि 'वक्त की मार है अंधेरा तभी आता है जब रोशनी चली जाती है। तो उसके अंधेरे को नहीं, तुम फ़ातिमाकी रोशनी को देखो' माँ के इस वाक्य ने मुझे फ़ातिमा के और करीब कर दिया। आज वह दूसरे शहर में है लेकिन वह मेरे दिल के सबसे करीब है...।

पड़ोस में अकील अंकल के यहाँ जो लड़का रहने आया था, उसे लोग शोयब नाम से जानते थे। मैंने देखा है उसे सफ़ेद कुर्ता-पजामा पहने, सर पर सफ़ेद टोपी लगाए, करीब छः फुट का, उम्र यही कोई अट्ठाईस साल रही होगी। कहने वाले कह रहे थे कि अकील ने किसी आतंकवादी को अपना घर बेच दिया है ताकि वह हम सबको मिटा सके। जब भी वह गली से गुजरता लोग उसे घूर कर ही देखते। उसके गुजरते हुए मैं बालकनी में होती तो पिता जी मुझे डांटकर घर के अंदर कर देते थे। अक्सर मैं सोचती क्या गुनाह था उसका? केवल इतना कि वह... । कुल मिलकर इस मित्तल कॉलोनी में जाने कहाँ से बारूद का बोरा आ गया था। कब कहाँ फट जाए इसकी चर्चा रोज होने लगी थी। इस कॉलोनी पर सबका बराबर का अधिकार था इसलिए उसे भगाया नहीं जा सकता था। मेरी बालकनी से उस घर की बालकनी साफ दिखती थी जिसमें वह रहता था। अक्सर मैं सुबह शाम उसे देख लेती थी । उसकी भी नजर मुझ से टकराती और मैं एक हल्की सी मुस्कान मुस्का देती । वह सहमकर जल्दी से अंदर चला जाता था । आखिर वह इस गली में माइनर था। गैर हिन्दू होने के कारण उसे डर था कहीं कुछ गलत न तो जाए। आखिर हिन्दी सिनेमा में कुछ

इसी तरह का सीन तो दिखाया जाता है कि आतंक फैलाना केवल मुस्लिमों का काम है।

करीब रात के बारह बज चुके थे। नींद आँखों से कोसों दूर थी। उमस से बुरा हाल था। मैंने बालकनी का दरवाजा खोला तो देखा शोयब अपनी बालकनी में सिगरेट पी रहा है। चाँद की हल्की रोशनी में उसे आसानी से देखा जा सकता था। एक मैं ही तो थी जो उसे मनुष्य रूप में देखती थी। वह किसी से फोन पर बात कर रहा था। लाइट जाने और सन्नाटा होने के कारण मैं उसकी बात सुनने की कोशिश करने लगी। वह फोन पर दूसरी ओर किसी से कह रहा था "पता नहीं मुझे यहाँ और कितने दिन रहना होगा, यह गली बहुत बेरहम है। जाने कैसे अकील अंकल यहाँ रहते थे।" मैं इतना ही सुन पाई थी कि उसकी नजर मुझ पर पड़ गई और वह तेजी से घर के अंदर चला गया। मेरे दिमाग में यह बात कौंध गई कि "यह गली बहुत बेरहम है"...मैंने उसे देखा है वह अक्सर डरा और सहमा सा दिखाई देता है। रोज सुबह वह चला जाता है और शाम होने के बाद ही घर वापस आता है। जाने किस बात का उसे डर था, वह क्यों यहाँ आया था...यह एक रहस्य बना हुआ था। किसी ने कभी जानने की कोशिश तक नहीं की, वह क्यों आया है? मगर नफरत के बीज सबके मन थे। यह सोचती हुई मैं अपने कमरे में आ गई। अब तक लाइट आ चुकी थी और आँखों में नींद की दस्तक भी।

सुबह जगने के बाद देखा कि आसमान में बादल छाए हुए हैं। कभी भी बारिश हो सकती है। मैं जल्दी से तैयार हो कॉलेज के लिए निकल गई। तकरीबन 2 बजे बारिश की बूँदा-बाँदी होने लगी। मेरी सहेली नीति और मैं कॉलेज से कुछ ही दूरी पर चाय पीने के लिए चले गए। सोचा मौसम अच्छा है तो चाय का मजा लिया जाए। चाय पीते हुए मैंने नीति को शोएब के बारे में बताया। नीति ने मुसकुराते हुए कहा कि "देख यार बात ठीक है, लेकिन यह तो हमारे समाज का हिस्सा है। लोगों की सोच यही है। जब तू भी उनके बीच अकेली होगी तू भी ऐसे ही लोगों का सामना करेगी।" मैंने कहा "हाँ मगर यह सही भी नहीं कि वह सबके लिए खतरनाक हो?"

इस देश में मुस्लिमों की स्थिति कौन नहीं जानता है, स्टीरियो टाइप से उन्हें जाना जाता है। इतिहास पढ़ते हुए मिश्रा सर से अक्सर सुनती थी...देश के विभाजन में इनका बड़ा हाथ था। जाने क्याहुआ था, मुझे सही-सही नहीं पता। इतिहास को जिसने जैसे चाहा, वैसे प्रस्तुत किया। किसी ने अपने ढंग से तो किसी ने सरकारों के कहने पर। यह मेरा केवल एक अनुमान है। बाकी समय जाने क्या हुआ था क्या नहीं? मुझे कभी भी इतिहास पसंद नहीं आया। मैं वर्तमान में जीने वाली बिंदास लड़की हूँ।

नीति "देख यार यह बात एकदम सही है कि वह खतरनाक नहीं...लेकिन इस बात पर यकीन कौन करेगा? क्या तुम जैसा सोचती हो...वैसे ही तुम्हारे घर वाले सोचते होंगे? ऐसी कई घटनाएँ समाज में उपस्थित हैं जिसे देखकर यकीन कर पाना बहुत मुश्किल है।"

मैंने कहा "बात तो तेरी ठीक है...लेकिन क्या किसी को इस तरह से सोसायटी में जलील करना हमारी संस्कृति का हिस्सा है?"

नीति ने कहा "हमारी संस्कृति सदियों से संक्रमित होती रही है...नफरत का बीज किसने कब और कहाँ बोया यह कहना मुश्किल है? मगर यह कहना बहुत आसान है कि किसी ने तो इसकी शुरुआत की होगी" बारिश के साथ हमारी बातें भी बढ़ती जा रही थीं। तभी मेरी नजर दूसरी तरफ गई और वहाँ एक व्यक्ति खड़ा था। पूरी तरह से भीगा हुआ और चाय का प्याला अपने हाथ में लेकर एक तरफ बैठ गया। उसके साथ दो लोग और थे। शायद साथी होंगे। मैंने नीति से कहा "देखो वह वही है" नीति भी उसकी तरफ देखने लगी और उसने कहा कि "यह कोई खतरनाक व्यक्ति नहीं जितना कि तेरे सोसायटी वाले समझ रहे हैं" मैंने झट से कहा "तो क्या मैं जाकर उससे बात करूँ?" नीति ने कहा यह सही नहीं होगा क्योंकि यह सही समय नहीं है और हम कॉलेज से कुछ ही दूरी पर हैं। यह चाय की दुकान कॉलेज के लिए जनरल दुकान है। यहाँ तेरे सोसायटी के और भी बच्चे आते हैं। मुझे लगता है यह समय थोड़ा सही नहीं है। मगर नीति की मैंने एक न सुनी और मैं किसी तूफान की तरह उसके पास जाकर बोली..."हैलो मैं..." उसने मेरी बात को बीच में काटते हुए कहा "देखिए मैं यहाँ कुछ दिनों के लिए आया हूँ और आप से गुजारिश है आप चलीं जाएँ" मैंने कहा 'मगर मुझे आपसे बात करनी है' वह कुछ देर मेरी तरफ देखने के बाद बोला कि 'मगर यह गुफ्तगू का सही समय और जगह नहीं है। कल दोपहर तीन बजे मैं आपसे चिल्ड्रेन पार्क में मिलूंगा। आप वहीं आ जाईएगा' उसी समय एकाएक मेरे दिल में खयाल कि इन दिनों लव-जिहाद के मामले तेजी से अखबारों कि सुर्खियां बटोर रहे हैं। लंबी बहसें चल रही हैं कि हिन्दू लड़कियों को प्रेम के नाम पर धर्म-परिवर्तन के लिए उकसाया जा रहा है। शायद यही वजह रही

होगी कि शोयब ने खुलेआम यहाँ बात करने से इंकार कर दिया । उसके इंकार के बाद मैं वापस अपने दोस्त के पास चली आई । और सोचने लगी कि कितना डरावना समय आ गया है? उसने पार्क में मुझसे मिलने को कहा है? क्या यह सही है? लेकिन अगर सही है तो क्या मेरा जाना उचित होगा? मेरा दिल और दिमाग एक दूसरे सेयही सवाल और जवाब करते रहे...मगर इन सभी प्रश्नों का कोई वाजिब उत्तर नहीं मिल सका । जाना गलत भी है और सही भी है ।

दूसरे दिन सुबह तड़के मैं उठ गई । पूरी रात नींद और मेरे बीच जंग होती रही लेकिन नींद ने आखिरकार फ़तह हासिल की । मन में एक अजीब सी बेचैनी थी...प्रश्नों का सैलाब मन में हिलोरे ले रहा था । सुबह से ही मुझे तीन बजे का इंतजार था । कब ये बाकी पल बीत जाएं और मैं उससे मिलने चली जाऊँ। आखिर किसी तरह ये समय के काले बादल छंट गए और जिस सुनहरेपल की मुझे तलाश थी, वह आ गया । मैं तकरीबन एक बजे घर से निकल गई । शहर के दूसरे हिस्से में चिल्ड्रेन पार्क था । घर से जाने में मुझे तकरीबन 45 मिनट का वक्त लगता । लेकिन आज मैं जल्दी जाना चाहती थी । घर से निकलकर मैंने आटो लिया । माँ कह रही थी स्कूटी से जाऊँ, मगर मैं घर वापस आने में वक्त लेना चाहती थी । इसलिए आटो से गई । ऐसा करने के पीछे मेरे पास एक वाजिब बहाना था, कि आने में मुझे जल्दी आटो नहीं मिल सका । उस एक पल के लिए कितना कुछ मैं सोच रही थी । रास्ते में मैंने नीति को साथ ले लिया । वह साथ होगी तो बहाना होगा कि हम घूमने गए थे। शहर का अधिकांश हिस्सा पिता जी को जानता था । किसी ने अगर देख लिया तो आफत आ जाएगी । ऐसी आफत कि पूछो न... ।

> **इतिहास सबका अलग है । जो सदियों पहले हुआ उसकी सज़ा हमें क्यों दी जाती है । क्या चंद लोगों के जिहादी होने से सारी कौम तो जिहादी नहीं हो जाएगी' उसने बात तो एकदम तार्किक की...मगर उसकी तार्किकता में दर्द ज्यादा था । सच ही तो कह रहा था, कुछ लोगों के जिहादी होने से सारी कौम तो जिहादी नहीं बन सकती है ।**

दो बजे ही चिड्रेन पार्क के गेट पर नीति और मैं पहुँच चुके थे । अभी एक घंटा बचा था। जब हम पार्क के अंदर गए तो देखा कि हमारे पड़ोस के शर्मा जी किसी सज्जन के साथ बैठे थे । उनको देखकर मैंने जल्दी से अपना फेस कवर करके पार्क के दूसरे हिस्से में चली गई । नियति को जाने क्या ही मंजूर था। शर्मा जी को भी आज के दिन ही यहाँ आना था । मैं इंतजार करने लगी कब वे जाएं और चेहरे से मैं अपना नकाब हटाऊँ । नकाब आपकी पहचान को छुपा देता है । वही तो मैं कर रही थी । इसलिए मैंने अपने चेहरे को नकाब से ढँक रक्खा था । एक छोटे से पीपल के पेड़ के नीचे हम दोनों बैठ गए, लेकिन सबसे बड़ी समस्या ये है कि अगर शर्मा जी निर्धारित वक्त पर नहीं गए, तो जिस आदमी से मैं मिलना चाहती थी, वह मुझे नकाब में पहचानेगा कैसे? मेरी विवशता को मेरा मन ही जानता था । मैं मिन्नतेंकरने लगी । किसी तरह पानी का यह उफान कम हो जाए । वर्ना आज के दिन मेरे घर को डूबने से कोई नहीं बचा सकता । मैं घबराने लगी । लेकिन किसी तरह खुद को संभाला । नीति ने कहा 'इतना घबराने कि जरूरत नहीं है । वह केवल एक इंसान है । कोई सैलाब नहीं जिसमें तू बह जाएगी ।' शहर का महौल इन दिनों काफी बिगड़ा हुआ था । जब से प्रशासन ने मुश्ताक अहमद को मारा है, तब से शहर में काफी दहशत का माहौल बना हुआ है । हिन्दू-मुस्लिम एक दूसरे को इस निगाह से देखते हैं कि कब मौका मिले और म्यान में रखी तलवारों की प्यास को ताजा रक्त मिल जाए । कल पिता जी ने कहा था, शहर ज्वालामुखी की तरह धधक रहा है। कब कहाँ पर क्या हो जाए कोई नहीं कह सकता है । राजनीति की रोटियाँ शायद इसी आग पर सेंकी जाती हैं । ऐसे में मैं एक हिन्दू लड़की किसी मुस्लिम लड़के से मिलूँगी, यदि किसी ने देख लिया और पहचान लिया तो जाने क्या से क्या हो जाएगा । सब कुछ मन की दीवारों पर किसी इलेक्ट्रानिक पल्स की तरह चल रहा था । नीति ने आवाज दी 'देख वह आ गया । जा उससे मिल ले मैं यहीं तेरा इंतजार कर रही हूँ ।' मेरा उत्साह अब भय में बदलने लगा था । अभी तुरंत मुझे लगने लगा कि मैं सभी हिन्दू समुदाय के लिए बहन न बन जाऊँ । कहीं मुझे कोई देख लेगा और पहचान लेगा तो इस लड़के का क्या हश्र होगा? जबकि मैं सिर्फ उससे इंसानियत के नाते मिल रही थी । बहुत से सवालों से मैं उलझती जा रही थी । मैं चेहरे पर नकाब डाले उस तरफ गई जहां शर्मा जी बैठे थे, जो अब वहाँ नहीं थे । उसके पास जाने के बाद मैंने कहा 'हैलो...शोएब मैं नीता' उसने मेरी ओर देखते हुए कहा?

'अरे आप मेरा नाम जानती हैं...कैसे?'

'हाँ नाम तो जानती हूँ...जहां आप रहते हैं, वह पूरी जगह आपका नाम जानती है' मैं यह कहते हुए आगे बढ़ गई । कुछ दूर हम साथ चले । जिस तरफ हम थे उसके दूसरी तरफ नीति बैठी थी । और वहीं से कुछ दूरी पर कुछ लोग थे जो शहर के माहौल पर रेडियो बने हुएथे । ताजा-तरीन खबरों को प्लेट पर सजाकर एक दूसरे को परोस रहे थे । हम दोनों एक बेंच देखकर बैठ गए । बैठते

ही शोयब ने कहा 'आप नकाब हटाएँगी या यूं बातचीत करेंगी''मैंने कहा नकाब हटाने की जरूरत है क्या?' शोयब ने तपाक से कहा 'एकदम है, नकाब पहनने की जरूरत क्या है...यहाँ तो आप ही के लोग हैं' उसका इतना कहना उस दर्द को बयान कर रहा था कि यहाँ उसका अपना कोई नहीं। कितनी बड़ी खाई थी हम दोनों के बीच जबकि हम दोनों एक दूसरे के पास बैठे थे। मैंने नकाब हटाते हुए, उससे नजरें मिलाकर कहा 'मैं आपके पास बैठी हूँ...कम से कम आप मुझे अपना समझकर ऐसा न कहें। यहाँ आपके भी लोग हैं। यह जो लोग बैठे हैं वह हम सभी के लोग हैं।' उसने कहा 'कहने और सुनने में यह ठीक लगता है लेकिन असलियत कुछ और ही है। सदियों पहले यहाँ क्या हुआ न ही आप जानती हैं और न ही मैं जनता हूँ। हम वही जानते हैं जो इतिहास की किताबों में दर्ज है। इतिहास सबका अलग है। जो सदियों पहले हुआ उसकी सज़ा हमें क्यों दी जाती है। क्या चंद लोगों के जिहादी होने से सारी कौम तो जिहादी नहीं हो जाएगी' उसने बात तो एकदम तार्किक की...मगर उसकी तार्किकता में दर्द ज्यादा था। सच ही तो कह रहा था, कुछ लोगों के जिहादी होने से सारी कौम तो जिहादी नहीं बन सकती है। मैंने बात बदलते हुए कहा कि 'आप कौन हैं और यहाँ क्या करने आएं हैं?' उसने कहा 'मैं यहाँ अपने खाला की बेटी की शादी में आया हूँ और अपने चचा जाँ के घर की मरम्मत के लिए भी। मगर शहर का माहौल अभी खुशनुमा नहीं है...जिसके कारण थोड़ा समय लग रहा है और मुझे यहाँ रुकना पड़ रहा है। अब सोचता हूँ चला जाऊँ। अगली बार देखा जाएगा।' मैं समझ गई यह अकील अंकल का भतीजा है। अभी मैं सोच में ही थी कि उसने कहा 'आप बताएं आप मुझसे क्यों मिलना चाहती थीं?' मैंने कहा 'कुछ विशेष नहीं बस यही देखना चाहती थी कि आप सुबह जाते हैं और देर रात घर वापस आते हैं। ऐसा क्यों करते हैं आप' उसने बड़े ही मासूम लहजे में कहा 'जब रात को कॉलोनी सो जाती है तो मुझे वह जिंदा इन्सानों की कॉलोनी नजर आती है और जब सुबह जागती है तो मुझे लगता है कि मेरा वहाँ दम घुटता है। सबकी नजरें मुझ पर ही टिकी रहती हैं। इसलिए मैं सुबह जल्दी चला जाता हूँ और देर रात घर वापस आकार सो जाता हूँ। ताकि मुझ पर किसी की नजर का साया भी न पड़े' इतने में मेरे फोन की घंटी बजी...स्क्रीन पर देखा तो शर्मा जी का नाम छप के आ रहा था। मैं डर गई। चारों तरफ नजरें उठाकर देखा वह नहीं थे। मगर उनका इस तरह अचानक से फोन आना, खतरे की घंटी लग रहा था। मैंने इग्नोर किया। शोयब ने कहा 'आप कॉल उठा लें' मैंने कहा 'नहीं कोई आवश्यक नहीं है' तकरीबन पाँच मिनट बाद फिर से फोन बाजा और इस बार माँ का कॉल था। मैंने फोन उठाया। माँ ने कहा 'तुम कहाँ हो इस वक्त...तभी दूसरी तरफ से पिता जी की तेज आवाज आई...तुम जिसके साथ हो मुझे पता है। शर्मा जी ने अभी कॉल किया था। मैं आ रहा हूँ तुम कहीं जाना मत...' इसके बाद कॉल डिसकनेक्ट हो गई। मैंने दुबारा फोन किया लेकिन माँ का फोन रिसिव नहीं हुआ। मैंने नजर उठा के देखा तो शर्मा जी कई लोगों के साथ पार्क के मेन गेट पर खड़े थे। आंखों के चारो तरफ अंधेरा छाने लगा। जैसे लग रहा था यह सब अचानक से क्या हो गया। इतने देर में शर्मा जी मेरे सामने आकर खड़े हो गए। उनको देखने के बाद में मेरी नशों में दौड़ रहे रक्त की रफ्तार बढ़ गई। दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। उनके साथ कुछ लोग थे जिनकी आँखों में नफरत और गुस्सा साफ झलक रहा था। मेरी नजर नीति की तरफ गई जो दूर एक पेड़ के आड़ में खड़ी, छुपकर मुझे देख रही थी। आसपास के लोगों की नजर हमारी तरफ थी। शर्मा जी ने कहा 'बेटा आप यहाँ इसके साथ क्या कर रही हो? क्या माजरा चल रहा आप दोनों के बीच?' मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि हमारा मिलना समाज कि नजरों में एक माजरा बन जाएगा। मैं चुप रही। शोयब ने मेरी तरफ देखते हुए कहा कि 'मैं चलता हूँ, आपके कहने पर मैंने आपसे मिलने के लिए कहा, मैं इसलिए डरता था कि कहीं कोई बखेड़ा खड़ा न हो जाए और...' उसे बीच में रोकते हुए शर्मा जी ने कहा 'तुम जिहादी हमारे घर की भोली-भाली लड़की को बहका रहे हो' उनके इशारे पर दो लोग ने शोयब को पकड़ लिया। उसे उसी बेंच पर धड़ाम से बैठाते हुए...लगे गालियाँ बकने। शोयब की एक भी बातसुनी नहीं गई। मैं खुले विचारों की होकर भी खुद को असहाय और बेबस पा रही थी। कुछ देर में पिता जी और कॉलोनी के कुछ लोग आ गए। माहौल एकदम से सूरज की तरह गरम हो चुका था। मुझे ज़बरदस्ती गाड़ी में बैठा दिया गया और मैं असहाय उसे देखती रही। उसके लिए कुछ न कर पाने की टीस मुझे बेचैन कर रही थी। मैंने देखा वह उस निर्दोष आदमी की तरह चुपचाप डरा-सहमा कटघरे में खड़ा है, जिसे झूठे आरोपों से गुनहगार बनाया गया हो।

शहर ज्वालामुखी की तरह धधक रहा है। कब कहाँ पर क्या हो जाए कोई नहीं कह सकता है। राजनीति की रोटियाँ शायद इसी आग पर सेंकी जाती हैं। ऐसे में मैं एक हिन्दू लड़की किसी मुस्लिम लड़के से मिलूँगी, यदि किसी ने देख लिया और पहचान लिया तो जाने क्या से क्या हो जाएगा। सब कुछ मन की दीवारों पर किसी इलेक्ट्रानिक पल्स की तरह चल रहा था।

उसके बाद गाड़ी घर की ओर रवाना हो गई और वह लोगों के भीड़ के बीच खड़ा धीरे-धीरे अदृश्य होता गया। घर आने के बाद माँ को शख्त हिदायत दे दी गई कि मैं घर के बाहर कदम नरख पाऊँ। मेरा फोन मुझसे ले लिया गया। पापा पूरे दिन घर में नहीं थे। माँ भी अनमनी सी थी। रहें भी क्यों नहीं...आज उनकी घर की बेटी घर की इज्जत को बाजार में बेंच आई थी। किस भाव में किसी को नहीं पता। लेकिन हाँ एक बात थी की भाव बहुत महंगा था। शाम हो गई। मुझे चिंता हो रही थी शोयब कहाँ होगा? किस हाल में होगा? मैं क्यों उसे मिलने गई। तकरीबन सात बजे के करीब पापा घर लौटे। बेहद गुस्से से भरे हुए थे। आकार मुझ पर बिन बादल के ही बरस पड़े 'आज तुम्हारी वजह से समाज में मेरी नाक कट गई। सारा समाज कह रहा है कि आपकी बेटी ऐसी होगी किसी ने सोचा नहीं था। तुमने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। मुझे शर्म आ रही तुम्हें अपनी बेटी कहते हुए' कहते-कहते वो ऊपर वाले कमरे में चले गए। मैं सोफ़े पर बैठकर सोचने लगी कि मेरे और शोयब के पाक रिश्ते को समाज कोई और ही दिशा देने पर तुला हुआ है। मैं केवल एक ही बार तो मिली थी और इस समाज के लोगों ने उसे क्या नाम दे दिया? ओह! किस तरह का लांछन मेरे चरित्र पर लगाया गया है..कितना भयानक है इंसान होना। मेरा पढ़ा-लिखा परिवार भी कैसे अनपढ़ों जैसी बातें करने लगा है। रात ऐसे ही गुजर गई। पूरी रात जागती रही। तकरीबन भोर में चार बजे के करीब मुझे नींद आई और आँख खुली तो सुबह के आठ बज रहे थे। मैंने बाहर देखा गर्मी अपने पूरे शबाब पर थी...पर सूरज के स्वच्छ प्रकाश में भी मुझे ये दुनिया धुएँ से भरी दिखाई दे रही थी। मेरी जिंदगी भी इसी धुएँ में कहीं खो गई थी...आगे कुछ नजर नहीं आ रहा था। क्या करूँ किससे बात करूँ। नीति से बात करने कामन था। जानना चाहती थी कल मेरे आने के बाद क्या हुआ? मगर फोन मेरे पास नहीं था। मैं उठकर कमरे के बाहर आई। पापा पेपर पढ़ रहे थे। माँ चाय पी रही थी। घर में सब कुछ मुझे धुंधला दिखाई दे रहा था। पापा ने पेपर पढ़ते हुए कहा 'शहर का माहौल ठीक नहीं है। कल देर रात एक मुस्लिम लड़के की लाश मिली है...भगवान जाने क्या होने वाला है' पापा की बातों में व्यंग्य था। मैंने टीवी ऑन किया। वहाँ खबर चल रही थी कि 'एक मुस्लिम लड़के की लाश संदिग्ध अवस्था में मिली है' मैं घबरा गई। मुझे डर लगाने लगा। मैंने देखा मेरा फोन टेबल पर पड़ा था। मैं झट से फोन उठाकर अपने कमरे में आ गई और दरवाजा अंदर से बंद कर लिया। मैंने नीति को कॉल किया उसने फोन नहीं उठाया। कई बार कॉल करने के बाद उसने फोन उठाया। मैंने कल का सारा हाल पूछा उसने कहा कि 'शोयब को वो लोग लेकर चले गए थे...उनके जाने के बाद मैं चली गई थी। उसके बाद क्या हुआ मुझे नहीं पता। लेकिन जो घटना आज घटी है। हो सकता है व शोयब हो...ऐसा मेरा अनुमान है' इसके बाद उसने फोन रख दिया। मैं सोच में पड़ गई। क्या हुआ होगा कल? कहीं ऐसा तो नहीं शोयब को इन्हीं लोगों...! अरे नहीं-नहीं मैं यह क्या सोच रही हूँ। ऐसा नहीं हो सकता। लेकिन ऐसा हुआ होगा तो? क्या मैं खुद को माफ कर पाऊँगी? किसी अंधेरी गुफा में मैं फिसलती चली जा रही थी। अपने हालात और कल की घटना से मैं आतंकित हो गई हूँ। यह मैंने क्या कर दिया...क्यों मिलना था मुझे। मेरे मन रूपी गुफा में अंधेरा धीरे-धीरे घना होता जा रहा था। यह सब कैसे हो गया। सब समझ रहे हैं शोयब और मेरे बीच कुछ था लेकिन हकीकत तो मैं जानती हूँ... ऐसा कुछ नहीं था। घर की शशंकित दीवारें मुझे अजीब ढंग से देख रही थीं। काश कुछ पल ऐसे मिल जाएँ जो सुकून दें सके। काश ऐसा हो जाए कि मैं बालकनी में जाऊँ और शोयब सिगरेट पीता हुआ नजर आ जाए। सब कुछ पहले जैसा हो जाए। सब कुछ...इसी उलझन में नीता ने आँखें बंद की और घर की दीवारें उसे शशंकित नजरों से एकटक देखने लगी...एकटक...एकटक।